शोध विषय

निराला के उपन्यास में सामाजिक सरोकार एवं गद्य में जीवन दर्शन का अवलोकन

वाईबीएन विश्वविद्यालय राजा उलातु नामकुम, राँची के हिन्दी संकाय (हिन्दी विभाग) में

पीएच.डी. उपाधि हेतु

शोध –प्रस्ताव

शोध निर्देशिका

डॉ० अमिता कुमारी

सहायक प्राध्यापिका

हिन्दी विभाग

वाईबीएन विश्वविद्यालय राँची
राँची (झारखण्ड)

शोधार्थी

रेखा कुमारी

Enrolment No-YBNU2202465

हिन्दी विभाग

वाईबीएन विश्वविद्यालय राँची
राँची (झारखण्ड)

वाईबीएन विश्वविद्यालय राँची
राँची (झारखण्ड)

2023

Scanned with OKEN Scanner

(1) प्रस्तावना :

हिन्दी गद्य साहित्य के इतिहास को जिस परिवेश में देख रहे हैं उसकी कथा सदियों पुरानी है, यहाँ तक आने में विविध परिस्थितियों से गुजरना पड़ा है। जितने भी भाषायें, बोली आदि हैं उसकी एक कथा–परम्परा रही है।

सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' बहुआयामी व्यक्तित्व के साहित्याकर थे। इनका जन्म 21 फरवरी, 1896 ई० को बंगाल में महिषादल रियासत, जिला– मेदिनीपुर में हुआ। जन्म तिथि को लेकर विद्वानों में मतभेद है। माता रूक्मिणी तथा पिता पंडित रामसहाय थे। सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' के बचपन का नाम सुर्ज कुमार था। सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' की प्रारंभिक शिक्षा महिषादल हाई स्कूल में हुई थी परंतु उन्हें वह पद्धति में रुचि नहीं लगी फिर उनकी शिक्षा बंगाली माध्यम से शुरू हुई। हाई स्कूल की पढ़ाई पास करने के बाद उन्होंने घर पर रहकर ही हिंदी, संस्कृत, अंग्रेजी, साहित्य (भाषा) का अध्ययन स्वाध्याय से किया था। 'निराला' जी साहित्य के उन चार प्रमुख स्तंभों में से एक हैं जिन्होंने अपनी शानदार कविताओं से दिल जीता है। 'निराला' जी हिंदी साहित्य के एक बहुत ही महत्वपूर्ण कवि, लेखक, उपन्यासकार, कहानीकार, निबंधकार और संपादक थे। वह प्रगतिवाद, प्रयोगवाद, काव्य के जनक और अपने नाम के अनुरूप हर क्षेत्र में निराला ही थे। उनके अंदर एक सबसे अहम गुण था – 'यथा नाम तथा गुण' जिसका प्रमाण मिलता है।

(2) शोध विषय की प्रेरणा एवं चयन :–

किसी भी साहित्यकार का अध्ययन या शोध अध्ययन करने के पूर्व उसके व्यक्तित्व और कृतित्व से परिचित होना आवश्यक माना जाता है। जब मैं बी.ए. प्रथम वर्ष में पढ़ती थी तब पाठ्यक्रम में सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' जी की कविता **'सरोज स्मृति'** पढ़ने आया और इस लंबी कविता के साथ–साथ 'शोक–गीत' है जिसमें समाज में घटित होने वाली विभिन्न समस्या इस कविता/काव्य के माध्यम से उन्होंने अपने जीवन के कई त्रासदी वाले पक्षों को उजागर किया है। तब मैं सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' के पद्य रचना के साथ–साथ गद्य रचना में कहानी, उपन्यास, निबंध, रेखा–चित्र, आलोचना, जीवनी आदि अनेक विधाओं का अध्ययन किया, जिससे मेरे अंदर तभी से शोध–विषय निश्चित हो गया।

(3) शोध का महत्व :–

अनुसंधान किसी समस्या के समाधान के लिए किया जाता है ताकि भविष्य में ऐसी स्थितियों या परिस्थितियों का सामना किया जा सके। गद्य साहित्य को अभिव्यक्ति का सरल, सहज माध्यम माना जाता है। शोध के माध्यम से व्यावहारिक समस्याओं का समाधान किया जाता है। पूर्व में किए गए शोध का निदान और आगामी शोध की नवीन दृष्टि से शोध की जाती है। शोध ज्ञात विविध पक्षों में विविधता लाती है।

जब हम किसी विषय के बारे में शोध करते हैं तो उसके विभिन्न पहलुओं का अध्ययन करते हैं। इससे हमारी बौद्धिक क्षमता और विश्लेषण करने की क्षमता विकसित होती है। इस शोध के माध्यम से अज्ञात तथ्यों को खोजने का प्रयास कर उसे एक नवीन धारा से व्याख्या कर के शोध किया जाएगा।

सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' के उपन्यास में सामाजिक सरोकार एवं जीवन दर्शन का अवलोकन :–

'निराला' के उपन्यास साहित्य से यह जानने का प्रयास करेंगे की तत्कालिन समाज में व्याप्त अंधिविश्वास में कितना परिवर्तन और प्रभाव पड़ा।

(4) शोध का उद्देश्य :–

बिना किसी सार्थक प्रयोजन की कोई भी कार्य चाहे वह कितना भी महत्वपूर्ण क्यों न हो व्यर्थ ही मालूम होती है। अतः इस शोध की बहुमुखी व दूरगामी उद्देश्य है जो इसकी सार्थकता को प्रमाणित करते हैं।

सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' जी पर भी अन्य कथाकारों की तरह बहुत ही शोध हुए लेकिन उपन्यास में समाज की वास्तविकता एवं जीवन–दर्शन की वास्तविकता किसी ने शोध नहीं किया है इसलिए यह अनछुआ और नूतन शोध विषय है।

सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' के लेखन काल के अंतर्गत हिंदी उपन्यासों में समाज की मानसिकता व वास्तविकता स्त्री–पुरुष के जीवन संबंधों की जानकारी एवं विश्लेषण।

पाठकों की आधुनिक युग के जीवन–शैली से अवगत कराना और हिंदी उपन्यास के प्रति उनकी रुचियों में वृद्धि करना।

(5) शोध प्रारूप एवं अध्ययन पद्धति :–

शोध प्रारूप वह है जो शोधकर्ता अपने शोध–कार्य में नियम को अपना कर शोध और विश्लेषण करता है। शोध पद्धति जो अनुशासन में रहते हुए अपने उद्देश्य की प्राप्ति होती है। प्रस्तुत शोध–कार्य में सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' का उपन्यास साहित्य को आधार ग्रंथ के रूप में लिया जाएगा। उनके उपन्यास साहित्य का अध्ययन करते हुए उनके समकालीन साहित्यकारों को भी शामिल किया जाएगा ताकि शोध प्रामाणिक रूप से किया जा सके। प्रस्तुत शोध में निम्नलिखित प्रविधियों का प्रयोग किया जाएगा –

(i) ऐतिहासिक पद्धति

(ii) तुलनात्मक पद्धति

(iii) सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' के उपन्यास एवं साहित्य पर विशेष रूप से गहन अध्ययन विश्लेषण किया जाएगा।

(iv) इस शोध कार्य में वेबसाइट, ब्लॉग एवं अन्य प्रणालियों का सूक्ष्म अवलोकन किया जाएगा।

(v) समाजशास्त्रीय पद्धति :– इस शोध के माध्यम से सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' की सामाजिक तत्व और सामाजिक परिवेश के साथ–साथ नैतिक और दार्शनिक तत्व का भी अध्ययन किया जाएगा। इस विधा से यह भी जानने का प्रयास करेंगे कि 'निराला' किस प्रकार साहित्य को समाज से जोड़ें तथा उनके विचारधारा का समाज पर क्या प्रभाव पड़ा।

(vi) मनोवैज्ञानिक पद्धति :– वह शोध नियम जिसके माध्यम से हम किसी की मन की बात को समझने का प्रयास करते हैं तथा अंतर्चेतना का विश्लेषण कर पाते हैं। 'निराला' की कृतियों से उसके पात्रों को जानने का प्रयास करेंगे। उनके आधार पर और विचारधारा से भूमिकाओं को जानने का प्रयास करेंगे।

इस शोध पद्धति के द्वारा 'निराला' की कृतियों के उनके पात्रों की मनःस्थिति उनका मानसिक द्वन्द्व, कुंठा आदि का मूल्यांकन विश्लेषण करने में सहयोग मिलेगा।

(6) पूर्वकृति शोध कार्य :–

(i) शीर्षक :– 'कवि 'निराला' के अंत साक्ष्यमूलक रचना संदर्भों का वस्तुगत एवं शिल्पगत विश्लेषण'

शोधकर्ता – आनंद प्रकाश वर्मा

मार्गदर्शक – उर्मिला सिंह

पूर्ण तिथि – 1996

विश्वविद्यालय – बाबा साहेब भीमराव अम्बेडकर, बिहार, विश्वविद्यालय।

(ii) शीर्षक :– 'निराला' काव्य पुरूष प्रकृति का प्रयोग'

शोधकर्ता – रेणुबाला

मार्गदर्शक – त्रिपाठी विश्वनाथ

विश्वविद्यालय – दिल्ली विश्वविद्यालय

पूर्ण तिथि – 1992

(iii) शीर्षक :– 'दलित विमर्श में निराला के उपन्यास'

शोधकर्ता – चौधरी, अंशु

मार्गदर्शन – शर्मा, आशा

विश्वविद्यालय – महाराज गंगा सिंह विश्वविद्यालय

पूर्ण तिथि – 2008

(iv) शीर्षक – 'सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' के कथा साहित्य में यथार्थवादी चेतना का विकास'

शोधकर्ता – सिंह श्वेता

मार्गदर्शक – यादव, लालसा

विश्वविद्यालय – इलाहाबाद विश्वविद्यालय

पूर्ण तिथि – 2018

(v) शीर्षक – 'सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' की कविता में मानवतावाद'

शोधकर्ता – सरदा देवी एस.

मार्गदर्शक – शेषरत्नम एस

विश्वविद्यालय – आन्ध्र विश्वविद्यालय

पूर्ण तिथि – 2006

(vi) शीर्षक – 'निराला' साहित्य में नारी'

शोधकर्ता – अग्रवाल उषा रानी

मार्गदर्शक – सिंह शिव करूण

विश्वविद्यालय – बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय

पूर्ण तिथि –

1970

इसके आगे भी निराला पर शोध कार्य हुए हैं और हो रहे हैं।

(6) शोध की परिकल्पना :– सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' जी ने अपने गद्य साहित्य और पद्य साहित्य के माध्यम से समाज में व्याप्त सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक, रूढ़िगत

जैसे यथार्थ जटिल समस्या से अवगत कराने का कार्य किया है जिसमें उपन्यास साहित्य में लोक–जीवन, राष्ट्र–जीवन, व्यक्ति, परिवार और समाज की व्यवस्था और जटिलता में गत्यात्मकता का उपाधान करती है। साथ ही सांस्कृतिक और ऐतिहासिक प्रश्नों को समझने की अत्याकृत दृष्टि भी प्रदान करती है। साथ ही राष्ट्रीय संदर्भों आभार कर व्यक्ति और वृहत्तर समाज को उसके प्रति कर्तव्यों की दीक्षा देती है। साहित्य में उपन्यास एवं गद्य साहित्य ही व्यक्ति और समाज के दायित्वों का नैतिक रंगमंच सजाता है। साहित्य चिंतकों का यह निर्विवाद निष्कर्ष है कि मानव और मानवता का एक स्थूल इतिहास भी है। स्थूल इतिहास की संभाल प्रबुद्ध मनीषी और सांस्कृतिक संरचनाएँ करती है तथा सूक्ष्म इतिहास का संरक्षण गद्य साहित्य के उपन्यास द्वारा ही संभव होता है। इसी वैचारिक मंथन का परिणाम है यह शोध विषय की परिकल्पना।

(7) वर्तमान ज्ञान में योगदान :–

भारतीय समाज में विविध भेद तथा भाषायी, सांस्कृतिक, जातीय, वर्गीय इत्यादि मौजूद है। यूँ तो 'निराला' के साहित्य के ऊपर बहुत सारे शोध कार्य पूर्ण किए गए हैं लेकिन मैंने उनकी रचनाओं के माध्यम से उनके विचारों को प्रमुखता से अन्वेषित करने का प्रयास किया है। मेरा यह प्रयास आने वाले अनेक शोधार्थी के लिए एक सहायक ग्रंथ के रूप में कार्य करें और मेरे इस शोध ग्रंथ से उन्हें कुछ लाभ भी जरूर प्राप्त हो। हिंदी साहित्य में 'निराला' अपने आप में एक ऐसा नाम है जो आने वाली पीढ़ी की उनके ऊपर शोध करने के लिए प्रेरित करती रहेगी।

(8) प्रस्तुत शोध प्रबंध में संभावित अध्याय :–

भूमिका

(1) प्रथम अध्याय :– सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' जीवनवृत्त एवं कृतित्व परिचय

(क) 'निराला' के जन्म एवं शिक्षा

(ख) 'निराला' का कृतित्व परिचय

(ग) 'निराला' का पुरस्कार एवं सम्मान

(2) दूसरा अध्याय :– 'निराला' के उपन्यास साहित्य में सामाजिक सरोकार एवं जीवन–दर्शन'

2. (क) – 'निराला' के सम्पूर्ण उपन्यासों का उल्लेख

2. (ख) – 'निराला' के उपन्यास में आर्थिक संघर्ष

2. (ग) – 'निराला' के उपन्यास में राजनीतिक संघर्ष

2. (घ) – 'निराला' के उपन्यास में सामाजिक संघर्ष

2. (ड.) – 'निराला' के उपन्यास में रूढीवादी एवं सांस्कृतिक संघर्ष

2. (च) – 'निराला' के समकालीन उपन्यासकारों के उपन्यासों में सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, धार्मिक, रूढ़ीवादी एवं सांस्कृतिक।

(3) तीसरा अध्याय :– 'निराला' के गद्य साहित्य में सामाजिक जीवन–दर्शन'

3. (क) – 'कहानी'

3. (ख) – 'निबंध'

3. (ग) – 'आलोचना'

3. (घ) – 'जीवनी'

3. (ड.) – 'रेखाचित्र'

3. (च) – 'पत्रकारिता'

(4) चौथा अध्याय :– 'निराला' के पद्य साहित्य में सामाजिक जीवन–दर्शन'

4. (क) – 'प्रगतिवादी'

4. (ख) – 'प्रयोगवादी'

4. (ग) – 'लम्बी कविता'

(5) पाँचवा अध्याय :– 'निराला' के समकालीन उपन्यासकारों के बीच 'निराला'

(6) छठा अध्याय – उपसंहार

प्रस्तुत अध्याय में उपर्युक्त पाँच अध्यायों का समग्र सार होगा। सभी अध्यायों के माध्यम से जो बात कही गई है उसे कहने की चेष्टा या प्रयास हम छठा अध्याय उपसंहार के रूप में करेंगे। सभी अध्यायों का निचोड़ यानी अध्याय 6 कह सकते हैं। इसी तरह हिंदी साहित्य में उपन्यास साहित्य का विविध।

(9) संदर्भ ग्रंथ सूची :–

- आधार ग्रंथ
- सहायक ग्रंथ
- पत्र–पत्रिकाएँ
- वेबसाइट
- पूर्ववर्ती शोधार्थियों द्वारा प्रकाशित शोध–पत्र

आधार ग्रंथ :–

- परिमल – 'पंचम संस्करण'–1997, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
- अनामिका – संस्करण 1988, भारतीय भंडार, लीडर प्रेस, इलाहाबाद।
- निराला रचनावली, खंड एक, संपा. नंदकिशोर नवल।
- निराला रचनावली खंड 2, 3, 4, 5, 6, 7, 8 संपा. नवल किशोर।
- अणिमा– 1971, लोक भारतीय प्रकाशन, इलाहाबाद।
- अर्चना–1973, लोक भारतीय प्रकाशन, इलाहाबाद।
- सांध्यकाकली–1981, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
- 'देवी' कहानी संग्रह–1962, निरुपमा प्रकाशन, इलाहाबाद।
- 'बेला'–1943, निरुपमा प्रकाशन, प्रयाग।
- 'नए पत्ते'–1973, लोक भारतीय प्रकाशन, इलाहाबाद।

- 'अप्सरा', गंगा पुस्तक माला कार्यालय लखनऊ द्वारा 1931 में प्रकाशित।
- अलका, राजकमल प्रकाशन समूह।
- 'प्रभावती' राजकमल प्रकाशन।
- 'निरुपमा' राजकमल प्रकाशन।

सहायक ग्रंथ –

- कवि निराला–प्रथम संस्करण, 1965, वाणी वितांत प्रकाशन, ब्रह्ममाणाल, वाराणसी, नंददुलारे वाजपेई।
- महाप्राण निराला, संस्करण, 1968, लोक भारतीय प्रकाशन, इलाहाबाद, गंगा प्रसाद पांडे।
- 'निराला' प्रथम संस्करण, 1969, राधाकृष्ण प्रकाशन, पदम सिंह शर्मा 'कमलेश'
- 'निराला की साहित्य साधना'–भाग 1, संस्करण, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, रामविलास शर्मा।
- 'निराला की साहित्य साधना'–भाग 2, संस्करण, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, रामविलास शर्मा।
- 'निराला की साहित्य साधना'–भाग 3 ,संस्करण, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, रामविलास शर्मा।
- निराला का गद्य साहित्य, डॉ० गया प्रसाद गुप्त, जय भारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2005।
- निराला रचनावली–भाग 1 2 3 4 5 6 7 एवं 8, संपा. नंदकिशोर नवल, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2006।

- **नोट** :– यह शोध रूपरेखा अंतिम नहीं है भविष्य में आवश्यकता अनुसार परिवर्तन किया जा सकता है।